मयूरपंख

हिंदी पाठ्यपुस्तक

8

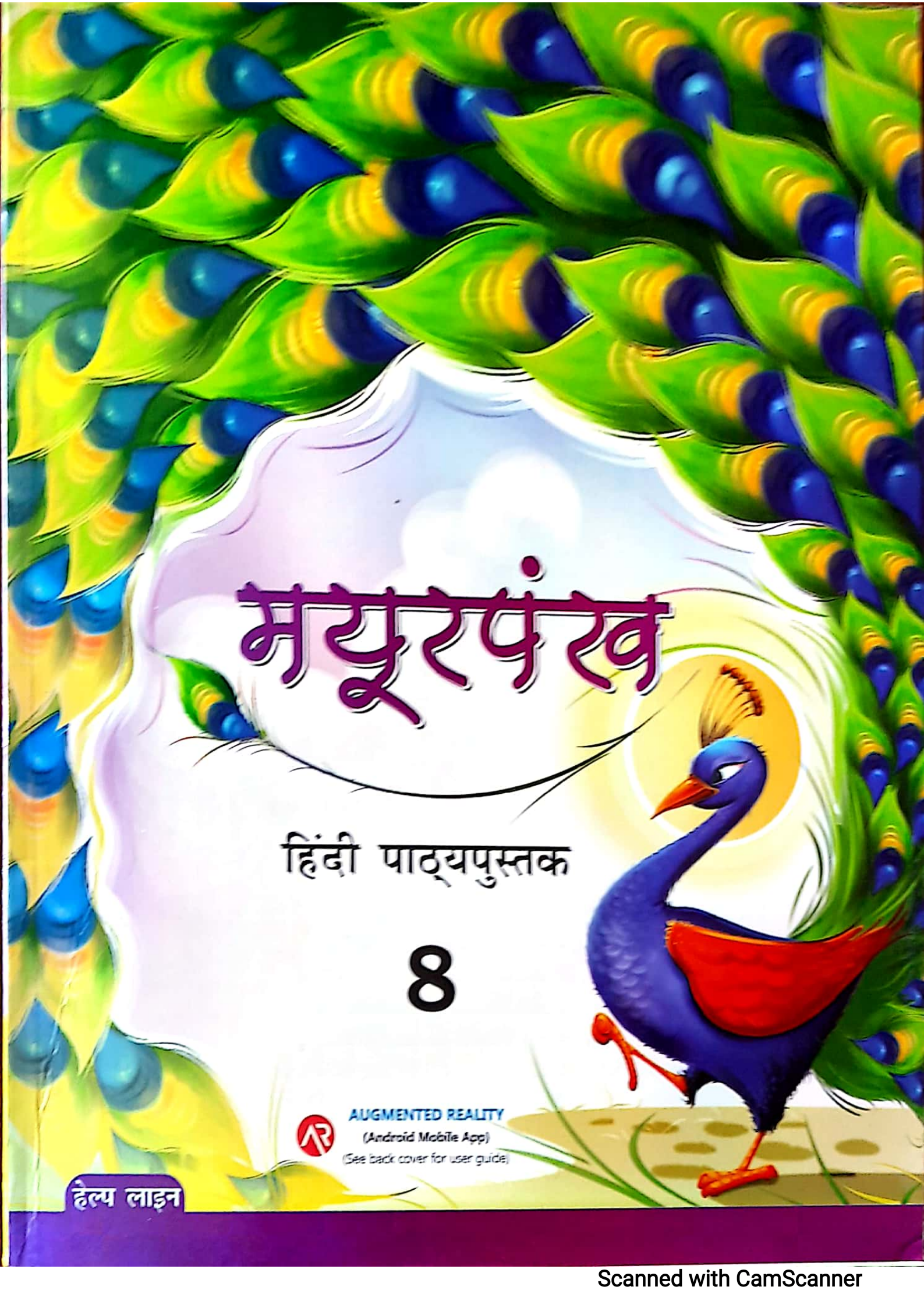

AUGMENTED REALITY
(Android Mobile App)
(See back cover for user guide)

हेल्प लाइन

Scanned with CamScanner

1

हिंदुस्तान हमारा है

कविता का सार

इस कविता में कवि हमें भारतीय संस्कृति की झलक दिखाते हुए कहते हैं कि जब से सूरज-चाँद बने हैं, हिमालय से अनेक नदियाँ निकली हैं तब से करोड़ों लोगों के दिलों में बसने वाला यह भारतवर्ष हमारा है। यहाँ पर प्रकृति की अनूठी छटा देखने को मिलती है। पृथ्वी के गर्भ में अमूल्य निधियों का खज़ाना छिपा है। यहाँ पर जन्मीं महान आत्माओं ने निःस्वार्थ भाव से भारतमाता की सेवा की है।

चिंतन की कड़ियाँ

देश केवल भौगोलिक सीमाओं में बँधा धरती का अंश नहीं है। देश का अर्थ जन समुदाय से है जो अपनी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार व व्यवहार से देश की सुदृढ़ता एवं सुंदरता को प्रदर्शित करता है। अपने देश व संस्कृति के प्रति मान, सम्मान और रक्षा का भाव हर देशवासी के मन में होना चाहिए।

कोटि-कोटि कंठों से निकली, आज यही स्वर-धारा है,
भारतवर्ष हमारा है, यह हिंदुस्तान हमारा है।

जिस दिन सबसे पहले जागे, नव-सिरजन के स्वप्न घने,
जिस दिन देश-काल के दो-दो, विस्तृत विमल वितान तने,
जिस दिन नभ में तारे छिटके, जिस दिन सूरज-चाँद बने,
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है।

यहाँ प्रथम मानव ने खोले, निंदियारे लोचन अपने,
इसी नभ तले उसने देखे, शत-शत नवल सृजन सपने,
यहाँ उठे स्वाहा के स्वर और, यहाँ स्वधा के मंत्र बने,
ऐसा प्यारा देश पुरातन, ज्ञान-निधान हमारा है।

सतलुज, व्यास, चिनाब, वितस्ता, रावी, सिंधु-तरंगवती,
यह गंगा माता, यह यमुना, गहर-लहर रस-रंगवती,
ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, वत्सलता-उत्संग-मती,
इनसे प्लावित देश हमारा, यह रसखान हमारा है।

विंध्य-सतपुड़ा, नागा-खसिया, ये दो औघट घाट-महा,
भारत के पूरब-पच्छिम के, ये दो भीम कपाट महा,
तुंग-शिखर, चिर-अटल हिमालय है पर्वत-सम्राट यहाँ,
यह गिरिवर बन गया युगों से, विजय-निशान हमारा है।

Scanned with CamScanner

क्या गणना है कितनी लंबी, हम सबकी इतिहास-लड़ी,
हमें गर्व है कि बहुत ही, गहरे अपनी नींव पड़ी,
हमने बहुत बार सिरजी हैं, कई क्रांतियाँ बड़ी-बड़ी,
इतिहासों ने किया सदा ही, अतिशय मान हमारा है।

–बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

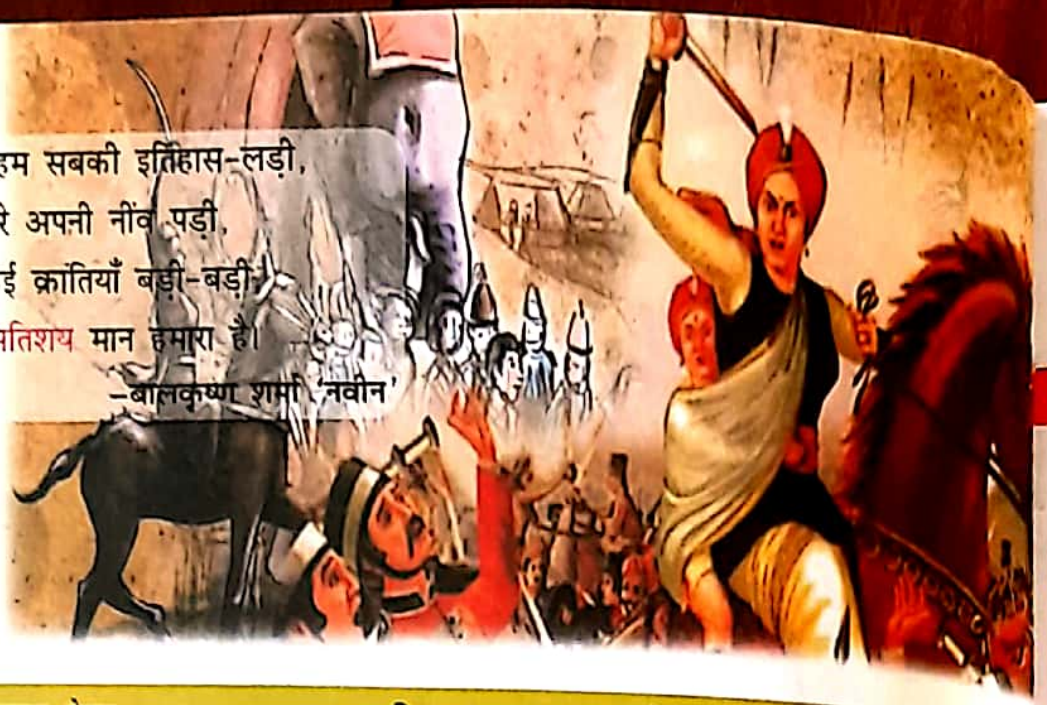

शब्दार्थ

विमल	–	साफ़, स्वच्छ, बेदाग	वितान	–	फैलाव, विस्तार
निंदियारे	–	नींद से भरे	नवल	–	नया
सृजन	–	किसी वस्तु आदि का निर्माण करना, बनाना	स्वधा	–	पितरों को हवि (भोजन) देते समय बोला जाने वाला शब्द
ज्ञान-निधान	–	ज्ञान का भंडार या खज़ाना	प्लावित	–	जल में डूबा हुआ, पानी से पूरी तरह भरा हुआ
औघट	–	दुर्गम, कठिन	तुंग-शिखर	–	ऊँचे पहाड़ की चोटी
गणना	–	गिनती	अतिशय	–	बहुत ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर

ज्ञान मंजूषा

* भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेज़ों के विरुद्ध आंदोलन की दो धाराएँ थीं– एक अहिंसक आंदोलन की धारा एवं दूसरा सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन। भारत की आज़ादी के लिए सन् 1857 से 1947 के बीच जितने भी प्रयत्न हुए, उनमें स्वतंत्रता का सपना सँजोए क्रांतिकारियों और शहीदों की उपस्थिति सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। वस्तुतः भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग है। भारत की धरती के प्रति भक्ति और मातृभावना क्रांतिकारियों में कूट-कूटकर भरी हुई थी। वे मातृभूमि की सेवा के लिए मर-मिटने को तैयार थे। हमारा कर्तव्य है कि बलिदानों और त्याग से मिली इस आज़ादी की रक्षा करने के लिए हम अपनी मातृभूमि की सदैव रक्षा करें।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
जन्म : 08-12-1897
मृत्यु : 29-04-1960

रचनाकार-परिचय

निर्भीक व ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी **श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'** का जन्म मध्य प्रदेश में शाजापुर ज़िले के भयाना नामक गाँव में 8 दिसंबर 1897 को हुआ था। विद्यार्थी जीवन में ही इनकी मुलाकात माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त एवं गणेशशंकर 'विद्यार्थी' सरीखे महान साहित्यकारों से हुई। इनके व्यक्तित्व व लेखनी का प्रभाव भी नवीन जी की रचनाओं में यदा-कदा झलकता है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन के प्रभाव में पढ़ाई छोड़कर ये राजनीति में आ गए। काव्य-लेखन के क्षेत्र में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस योगदान के लिए इन्हें भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि प्रदान की थी।

इनका निधन 29 अप्रैल 1960 को हुआ था।

प्रमुख कृतियाँ– उर्मिला, कुंकुम, रश्मिरेखा, अपलक, क्वासि आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

कविता की समझ (Comprehension Skills)

- Listening and Writing Skills
- Oral Expression
- MCQs
- Fill in the Blanks
- Written Expression
  - — Based on Passage
  - — Short Answer Type Questions
  - — Long Answer Type Questions

1. **श्रुतलेख**

   विस्तृत   निंदियारे   स्वधा   ब्रह्मपुत्र   गिरिधर

मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

2. **नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

   (क) कवि ने इस कविता में किसका गुणगान किया है?

   (ख) कविता में माता किसे कहा गया है?

   (ग) हिंदुस्तान का पर्वत-सम्राट कौन है?

3. **कविता के अनुसार सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**

   (क) 'भारतवर्ष हमारा है' यह स्वर-धारा निकल रही है–

   (अ) सूरज-चाँद से ◯   (ब) कोटि-कोटि कंठों से ◯

   (स) नभ के तारों से ◯   (द) तुंग-शिखर से ◯

   (ख) रस-रंगवती कहा गया है–

   (अ) गंगा को ◯   (ब) सतलुज को ◯   (स) व्यास को ◯   (द) यमुना को ◯

   (ग) भारत के पूरब-पश्चिम के दो भीम कपाट कौन-से हैं?

   (अ) विंध्य-सतपुड़ा, नागा-खसिया ◯   (ब) विंध्य-सतपुड़ा, चिनाब-व्यास ◯

   (स) नागा खसिया, चिनाब-व्यास ◯   (द) नागा-सतपुड़ा, चिनाब-व्यास ◯

   (घ) भारत की नींव गहरी होने पर कवि कैसा महसूस करते हैं?

   (अ) गर्वित ◯   (ब) हर्षित ◯   (स) पुलकित ◯   (द) उत्सुक ◯

   (ङ) कवि ने विजय-निशान कहा है–

   (अ) सतपुड़ा को ◯   (ब) हिमालय को ◯   (स) पुरातन को ◯   (द) श्रीकृष्ण को ◯

लिखित प्रश्न (Written Questions)

4. **कविता की अधूरी पंक्तियाँ पूरी कीजिए–**

   (क) जिस दिन सबसे पहले जागे, ____________ के स्वप्न घने,
   जिस दिन देश-काल के दो-दो, ____________ वितान तने,
   जिस दिन नभ में तारे छिटके, ____________ बने,
   तब से है यह देश हमारा, ____________ हमारा है।

5. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

   यहाँ प्रथम मानव ने खोले, निंदियारे लोचन अपने,
   इसी नभ तले उसने देखे, शत-शत नवल सृजन सपने,
   उठे स्वाहा के स्वर और, यहाँ स्वधा के मंत्र बने,
   ऐसा प्यारा देश पुरातन, ज्ञान-निधान हमारा है।

   (क) प्रथम मानव ने कहाँ और कैसे सपने देखे?

   (ख) यहाँ उठे 'स्वाहा के स्वर' से कवि का क्या तात्पर्य है?

Scanned with CamScanner

(ग) काव्यांश में ज्ञान-निधान किसे कहा गया है?

(घ) 'पुरातन' का विलोम शब्द लिखिए।

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

(क) कविता में हमारी ऐसी कौन-सी विशेषता का वर्णन है जिसकी गणना नहीं की जा सकती?

(ख) कविता में भारतीय संस्कृति का परिचय किस प्रकार दिया है?

(ग) 'इनसे प्लावित देश हमारा' से क्या अभिप्राय है?

(घ) कविता के द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(क) कवि के अनुसार इतिहास ने हमारा अतिशय मान क्यों किया?

(ख) हमारा देश पुरातन क्यों कहलाता है?

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए–

–हमें गर्व है कि बहुत ही, गहरे अपनी नींव पड़ी।

–यह गिरिवर बन गया युगों से, विजय-निशान हमारा है।

मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) इस कविता में अनेक नदियों के नाम लिए गए हैं। नदियों का हमारे जीवन में क्या योगदान है? इनसे हमें क्या सीख मिलती है?

(ख) 'हिंदुस्तान हमारा है' शीर्षक से क्या भाव उजागर होता है? देश के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है? अपने विचार लिखिए।

भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Disjoining of Words
- Opposite Words
- Prefix
- Synonyms
- Noun

1. वर्ण-विच्छेद कीजिए–

(क) भारतवर्ष _____

(ख) वत्सलता _____

(ग) सम्राट _____

(घ) विस्तृत _____

(ङ) इतिहास _____

(च) ज्ञान _____

2. विलोम शब्द लिखिए–

(क) दिन _____

(ख) सृजन _____

(ग) पूरब _____

(घ) प्रथम _____

(ङ) मान _____

(च) विजय _____

3. प्र + कृति = प्रकृति

आ + भूषण = आभूषण

उपर्युक्त शब्दों को ध्यान से देखिए। शब्दों के आगे 'प्र' तथा 'आ' लगकर नए शब्द बने हैं। इन्हें **शब्दांश** कहते हैं। वे शब्दांश जो शब्द के आगे (पहले) लगकर नए शब्द बनाते हैं, **उपसर्ग** कहलाते हैं।

निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए–

(क) प्रदेश _____

(ख) विज्ञान _____

Scanned with CamScanner

[illegible]

2. नीचे दिए गए शब्दों को उनके पर्यायवाची शब्दों से मिलाइए।

[illegible]

3. संज्ञा के तीन भेद होते हैं : व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

नीचे दिए गए वाक्यों में से संज्ञा शब्द और उनके भेद लिखिए।

	संज्ञा शब्द	संज्ञा भेद
(क) [illegible]		
(ख) [illegible]		
(ग) [illegible]		
(घ) [illegible]		
(ङ) [illegible]		

गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

1. [illegible]
2. [illegible]
3. एक फ़िल्मी गाना है - [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]

[illegible]

Scanned with CamScanner

2

सुभान ख़ाँ

पाठ का सार

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित यह कहानी एक मुस्लिम कारीगर के इर्द-गिर्द घूमती है। एक साधारण-से कारीगर की ऊँची सोच और कहानी का धर्म-निरपेक्ष परिवेश वर्तमान युग में विभिन्न धर्मों के बीच की दूरी को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बेनीपुरी जी की यह कहानी धर्म-निरपेक्षता की ओर उठा एक सकारात्मक कदम है।

चिंतन की कड़ियाँ

धर्म एक मनुष्य को दूसरे के साथ जोड़ता है। हमारे जीवन में, हमारे आसपास ऐसे अनेक लोग हैं जो विभिन्न धर्मों और जातियों के हैं परंतु एक साथ मिल-जुलकर रहते हैं। कई बार स्वार्थी व ढोंगी धर्माधिकारी या भ्रष्ट नेता अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए लोगों के बीच मन-भेद पैदा करते हैं। हमें ऐसे लोगों से सावधान रहने का प्रयास करना चाहिए।

"क्या आपका अल्लाह पश्चिम में रहता है? वह पूरब में क्यों नहीं रहता?" सुभान दादा की लंबी, सफ़ेद चमकती, रोब बरसाती दाढ़ी में अपनी नन्हीं उँगलियों को घुसाते हुए मैंने पूछा। उनकी चौड़ी, उभरी पेशानी पर एक उल्लास की झलक और दाढ़ी-मूँछ की सघनता में दबे पतले अधरों पर एक मुसकान की रेखा दौड़ गई। अपनी लंबी बाँहों की दाहिनी हथेली मेरे सिर पर सहलाते हुए उन्होंने कहा, "नहीं बबुआ! अल्लाह तो पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्खिन सब ओर है।"

"तो फिर आप पश्चिम की ओर मुँह करके खड़े होकर ही नमाज़ क्यों पढ़ते हैं?"

"पश्चिम ओर के मुल्क में अल्लाह के रसूल आए थे। जहाँ रसूल आए थे, वहाँ हमारे तीरथ हैं। हम उन्हीं तीरथों की ओर मुँह करके अल्लाह को याद करते हैं।"

"वे तीरथ यहाँ से कितनी दूर होंगे?"

"बहुत दूर।"

"जहाँ सूरज देवता डूबते हैं?"

"नहीं, उससे कुछ इधर ही।"

"आप उन तीरथों में गए हैं, सुभान दादा?"

देखा, सुभान दादा की बड़ी-बड़ी आँखों में आँसू डबडबा आए, उनका समूचा चेहरा लाल हो उठा। भाव-विभोर हो गद्‌गद कंठ से बोले, "वहाँ जाने में बहुत खर्च पड़ते हैं, बबुआ! मैं गरीब आदमी ठहरा न! इस बुढ़ापे में भी इतनी मेहनत-मशक्कत कर रहा हूँ कि कहीं कुछ पैसा बचा पाऊँ और उस पाक जगह की ज़ियारत कर आऊँ।"

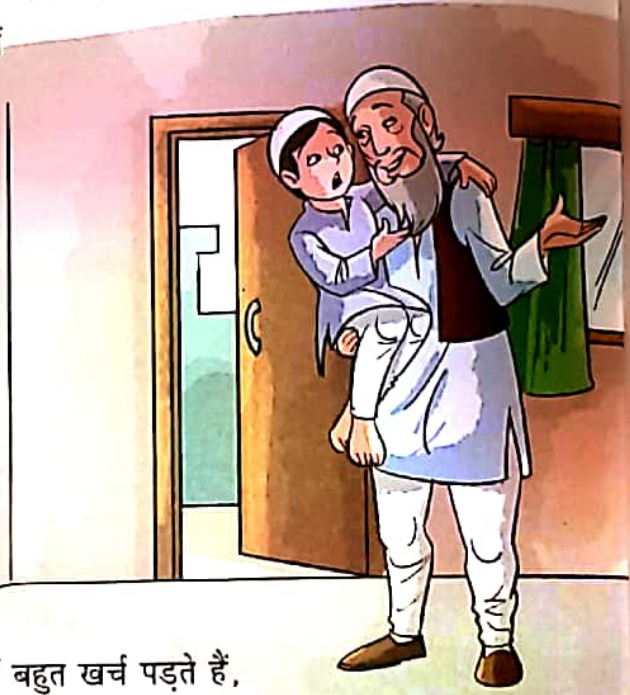

उनकी आँखों को देखकर मेरा बचपन का दिल भी भावना से ओत-प्रोत हो गया। मैंने उनसे कहा, "मेरे मामा जी से कुछ कर्ज़ क्यों नहीं ले लेते दादा?"

"कर्ज़ के पैसे से तीरथ करने में सवाब नहीं मिलता, बबुआ। अल्लाह ने चाहा तो एक-दो साल में इतने जमा हो जाएँगे कि किसी तरह वहाँ जा सकूँ।"

Scanned with CamScanner

"वहाँ से मेरे लिए भी कुछ सौग़ात लाइएगा न! क्या लाइएगा?"
"वहाँ से लोग खजूर और छुहारे लाते हैं?"
"हाँ, हाँ, मेरे लिए छुहारे ही लाइएगा–लेकिन एक दर्ज़न से कम नहीं लूँगा, हूँ!" सुभान दादा की सफ़ेद दाढ़ी-मूँछ के बीच उनके सफ़ेद दाँत चमक रहे थे। कुछ देर तक मुझे दुलारते रहे। फिर कुछ रुककर बोले, "अच्छा जाइए, खेलिए, मैं ज़रा काम पूरा कर लूँ। मज़दूरी भर पूरा काम नहीं करने से अल्लाह नाराज़ हो जाएँगे।"
"क्या आपके अल्लाह बहुत गुस्सेवर हैं?" मैं तुनककर बोला।
अब सुभान दादा बड़े ज़ोरों से हँस पड़े, फिर एक बार मेरे सिर पर हथेली फेरी और बोले, "बच्चों से वह बहुत खुश रहते हैं, बबुआ! वह तुम्हारी उम्र दराज़ करें" कहकर मुझे अपने कंधे पर ले लिया। मुझे लेते हुए दीवार के नज़दीक आए, वहाँ उतार दिया और झट अपनी कढ़नी और बसूली से दीवार पर काम करने लगे।
सुभान खाँ एक अच्छे राज समझे जाते हैं। जब-जब घर की दीवारों पर कुछ मरम्मत की ज़रूरत होती है, उन्हें बुला लिया जाता है। आते हैं, पाँच-सात रोज़ यहीं रहते हैं, काम खत्म कर चले जाते हैं। लंबा, चौड़ा, तगड़ा बदन है उनका। पेशानी चौड़ी, भवें बड़ी सघन और उभरी। आँखों के कोनों में कुछ लाली, पुतलियों में कुछ नीलेपन की झलक। नाक असाधारण ढंग से नुकीली। दाढ़ी सघन, इतनी लंबी कि छाती तक पहुँच जाए–वह छाती, जो बुढ़ापे में भी फैली, फूली हुई। सिर पर हमेशा ही एक दुपलिया टोपी पहने होते और बदन में नीमआस्तीन। कमर में कच्छे वाली धोती, पैर में साधारण-सा जूता। चेहरे से नूर टपकता, मुँह से शहद झरता। भलेमानसों के बोलने-चालने, बैठने-उठने के कायदे की पूरी पाबंदी करते वह।
किंतु, बचपन में मुझे सबसे अधिक भाती उनकी वह सफ़ेद चमकती हुई दाढ़ी। नमाज़ के वक्त कमर में धारीदार लुंगी और शरीर में सादा कुरता पहन, घुटने टेक, दोनों हाथ छाती से ज़रा ऊपर उठा, आधी आँखें मूँदकर जब वह मंत्र-सा पढ़ने लगते, मैं विस्मय-विमुग्ध होकर उन्हें देखता रह जाता। मुझे ऐसा मालूम होता, सचमुच उनके अल्लाह वहाँ आ गए हैं, दादा की झपकती आँखें उन्हें देख रही हैं, और ये होंठों-होंठों की बातें उन्हीं से हो रही हैं।
एक दिन बचपन के आवेश में मैंने उनसे पूछ भी लिया, "सुभान दादा, आपने कभी अल्लाह को देखा है?"
"यह क्या कह रहे हो, बबुआ? इनसान इन आँखों से अल्लाह को देख नहीं सकता!"
"मुझे धोखा मत दीजिए दादा, मैं सब देखता हूँ। आप रोज़ आधी आँखों से उन्हें देखते हैं, उनसे बुदबुदाकर बातें करते हैं। हाँ, हाँ, मुझे चकमा दे रहे हैं आप!"
"मैं उनसे बातें करूँगा, मेरी ऐसी तकदीर कहाँ! सिर्फ़ रसूल की उनसे बातें होती थीं, बबुआ। वे बातें कुरान में लिखी हैं।"
"अच्छा दादा, क्या आपके रसूल साहब की भी दाढ़ी थी?"
"हाँ-हाँ, थी। बड़ी खूबसूरत, लंबी, सुनहली–अब भी उनकी दाढ़ी के कुछ बाल मक्का में रखे हैं। हम अपने तीरथ में उन बालों के भी दर्शन करते हैं।"
"बड़े होने पर जब मुझे दाढ़ी होगी, मैं भी दाढ़ी बढ़ाऊँगा, दादा! खूब लंबी दाढ़ी।"
सुभान दादा ने मुझे उठाकर गोद में ले लिया, फिर कंधे पर चढ़ाकर इधर-उधर घुमाया। तरह-तरह की बातें सुनाईं, कहानियाँ कहीं। मेरा मन बहलाकर वह फिर अपने काम में लग गए। मुझे मालूम होता था, काम और अल्लाह–ये ही दो चीज़ें संसार में उनके लिए सबसे प्यारी हैं। काम करते हुए अल्लाह को नहीं भूलते थे और अल्लाह से फ़ुरसत पाकर फिर झट काम में जुट जाना, अपना पवित्र कर्तव्य समझते थे। और, काम व अल्लाह का यह सामंजस्य उनके दिल में प्रेम की वह मंदाकिनी बहाता रहता था, जिसमें मेरे जैसे बच्चे भी बड़े मज़े में डुबकियाँ लगा सकते थे।

Scanned with CamScanner

एक दिन नानी ने कहा, "सबेरे नहा-खा लो, आज तुम्हें हुसैन साहब के पैक में जाना होगा। सुभान खाँ आते ही होंगे।" जाने कितने देवताओं की मनौती के बाद माँ ने मुझे प्राप्त किया था, उनमें एक हुसैन साहब भी थे। नौ साल की उम्र तक, जब तक जनेऊ नहीं हो गया था, मुहर्रम के दिन मुसलमान बच्चों की तरह मुझे भी ताजिये के चारों ओर रंगीन छड़ी लेकर कूदना पड़ा है और गले में गंडे पहनने पड़े हैं। मुहर्रम उन दिनों मेरे लिए कितनी खुशी का दिन था। नए कपड़े पहनता, उछलता-कूदता, नए-नए चेहरे और तरह-तरह के खेल देखता, धूम-धड़क्के में किस तरह चार पहर गुज़र जाते। इस मुहर्रम के पीछे जो रोमांचकारी, हृदय को पिघलाने वाली, करुण रस से भरी दर्द-अंगेज़ घटना छिपी है, उन दिनों उसकी खबर भी कहाँ थी?

खैर, मैं नहा-धोकर, पहन-ओढ़कर इंतज़ार ही कर रहा था कि सुभान दादा पहुँच गए। मुझे कंधे पर ले लिया और अपने गाँव में ले गए। उनका घर क्या था, बच्चों का अखाड़ा बना हुआ था। पोते-पोतियों, नाती-नातिनों की भरमार थी उनके घर में। मेरी उम्र के बहुत-से बच्चे! रंगीन कपड़ों से सजे-धजे सब मानो मेरे ही इंतज़ार में! जब पहुँचा, सुभान दादा की बूढ़ी बीवी ने मेरे गले में एक बद्धी डाल दी, कमर में घंटी बाँध दी, हाथ में दो लाल छड़ियाँ थमा दीं और उन बच्चों के साथ मुझे लिए-दिए करबला की ओर चलीं। दिन भर उछला-कूदा, तमाशे देखे, मिठाइयाँ उड़ाईं और शाम को फिर सुभान दादा के कंधे पर घर पहुँच गया।

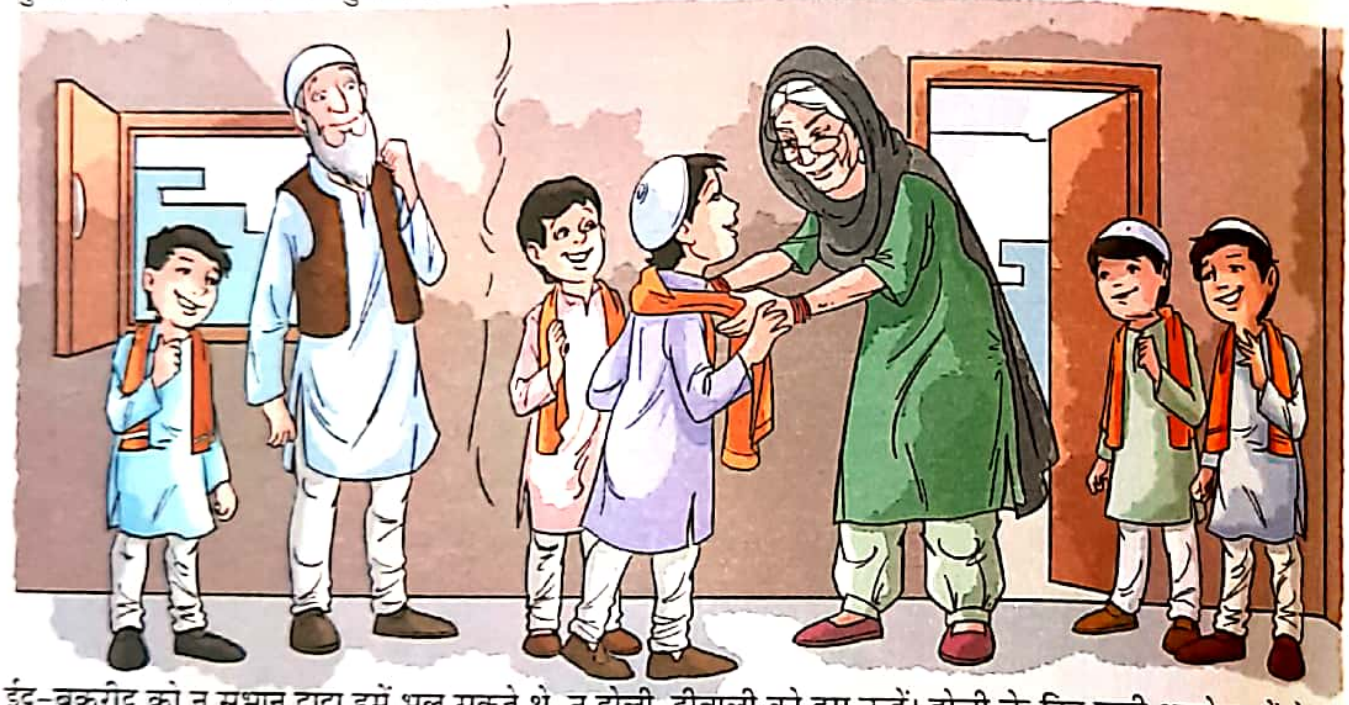

ईद-बकरीद को न सुभान दादा हमें भूल सकते थे, न होली-दीवाली को हम उन्हें। होली के दिन नानी अपने हाथों से पूए और खीर परोसकर सुभान दादा को खिलातीं। और, तब मैं ही अपने हाथों से अबीर लेकर उनकी दाढ़ी में मलता। एक बार जब उनकी दाढ़ी रंगीन बन गई थी, मुझे पुरानी बात याद आ गई। मैंने कहा, "सुभान दादा, रसूल की दाढ़ी भी तो ऐसी ही रंगीन रही होगी?"

"उसपर अल्लाह ने ही रंग दे रखा था बबुआ! अल्लाह की उनपर खास मेहरबानी थी। उनके-सा नसीब हम मामूली इनसानों को कहाँ?"

ऐसा कहकर, झट आँखें मूँदकर कुछ बुदबुदाने लगे—जैसे वह ध्यान में उन्हें देख रहे हों।

मैं भी कुछ बड़ा हुआ, उधर दादा भी आखिर हज कर ही आए। अब मैं बड़ा हो गया था लेकिन उन्हें छुहारे की बात भूली नहीं थी। जब मैं छुट्टी में शहर के स्कूल से लौटा, दादा यह अनुपम सौगात लेकर पहुँचे। इधर उनके घर की हालत भी अच्छी हो चली थी। दादा के पुण्य और लायक बेटों की मेहनत ने काफ़ी पैसे इकट्ठे कर लिए थे। लेकिन,

Scanned with CamScanner

उनमें वही विनम्रता और सज्जनता थी। आए, पहले की ही तरह शिष्टाचार निबाहा। फिर छुहारे निकालकर मेरे हाथ पर रख दिए, "बबुआ, यह आपके लिए खास अरब से लाया हूँ! याद है न, आपने इसकी फ़रमाइश की थी।" उनके नथुने आनंदातिरेक से हिल रहे थे।

छुहारे लिए, सिर चढ़ाया—ख्वाहिश हुई, आज फिर मैं बच्चा हो पाता और उनके कंधे पर लिपटकर उनकी सफ़ेद दाढ़ी में, जो अब सचमुच नूरानी हो चली थी, उँगलियाँ घुसाकर उन्हें दादा-दादा कहकर पुकार उठता। लेकिन, न मैं अब बच्चा हो सकता था, न ज़बान में वह मासूमियत और पवित्रता रह गई थी। अंग्रेज़ी स्कूल के वातावरण ने अजीब अस्वाभाविकता हर बात में ला दी थी। पर हाँ, शायद एक चीज़ अब भी पवित्र रह गई थी। आँखों ने आँसू की छलकन से अपने को पवित्र कर चुपचाप ही उनके चरणों में श्रद्धांजलि चढ़ा दी।

हज से लौटने के बाद सुभान दादा का ज़्यादा वक्त नमाज़-बंदगी में ही बीतता। दिन भर उनके हाथों में तसबीह के दाने घूमते और उनकी ज़बान अल्लाह की रट लगाए रहती। अपने जवार भर में उनकी बुज़ुर्गी की धाक थी। बड़े-बड़े झगड़ों की पंचायतों में दूर-दूर के हिंदू-मुसलमान उन्हें पंच मुकर्रर करते। उनकी ईमानदारी और दयानतदारी की कुछ ऐसी ही धूम थी।

सुभान दादा का एक अरमान था, मस्जिद बनाने का। मेरे मामा का मंदिर उन्होंने ही बनाया था। उन दिनों वह साधारण राज थे। लेकिन, तो भी कहा करते—अल्लाह ने चाहा तो मैं भी एक मस्जिद ज़रूर बनवाऊँगा।

अल्लाह ने चाहा और वैसा दिन आया। उनकी मस्जिद भी तैयार हुई। गाँव के ही लायक एक छोटी-सी मस्जिद लेकिन बड़ी ही खूबसूरत। दादा ने अपनी ज़िंदगी भर की अर्जित कला इसमें खर्च कर दी थी। हाथ में इतनी ताकत नहीं रह गई थी कि अब खुद कढ़नी या बसूली पकड़ें लेकिन दिन भर बैठे-बैठे एक-एक ईंट की जुड़ाई पर ध्यान रखते और उसके बाहर-भीतर जो बेल-बूटे काढ़े गए थे, उनके सारे नक्शे उन्होंने ही खींचे थे और उनमें से एक-एक का काढ़ा जाना उनकी ही बारीक निगरानी में हुआ था।

मेरे मामा जी के बगीचे में शीशम, सखुए, कटहल आदि इमारती पेड़ों की भरमार थी। मस्जिद की सारी लकड़ी हमारे ही बगीचे से गई थी।

जिस दिन मस्जिद तैयार हुई थी, सुभान दादा ने जवार भर के प्रतिष्ठित लोगों को न्योता दिया था। जुमा का दिन था। जितने मुसलमान थे, सबने उसमें नमाज़ पढ़ी थी। जितने हिंदू आए थे, उनके सत्कार के लिए दादा ने हिंदू हलवाई रखकर तरह-तरह की मिठाइयाँ बनवाई थीं, पान-इलायची का प्रबंध किया था। अब तक भी लोग उस मस्जिद के उद्घाटन के दिन की दादा की मेहमानदारी भूले नहीं हैं।

—रामवृक्ष बेनीपुरी

शब्दार्थ

पेशानी	–	माथा, मस्तक	उल्लास	–	प्रसन्नता, खुशी
रसूल	–	दूत	सवाब	–	पुण्य
उम्र दराज़	–	लंबी आयु	नीम आस्तीन	–	आधी बाँह का
विस्मय-विमुग्ध	–	हैरानी में डूबा हुआ	सामंजस्य	–	तालमेल
ताजिया	–	रंगीन कागज़, पन्नी व बाँस की तीलियों से बना इमाम हुसैन की कब्र का मंडप	बद्धी	–	काले धागे में पिरोया हुआ ताबीज़
करबला	–	जहाँ ताजिये दफ़नाये जाते हैं	हज	–	मक्का की धार्मिक यात्रा
नूरानी	–	चमक-दमक वाली	तसबीह	–	वह माला जिसे मुसलमान अल्लाह का नाम लेने के लिए फेरते हैं
जवार भर	–	आसपास का क्षेत्र	मुकर्रर	–	निश्चित
दयानतदारी	–	दयालुता			

Scanned with CamScanner

ज्ञान मंजूषा

- पैगंबर मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई॰ पू॰ में मक्का में हुआ था। मक्का में एक विशाल मस्जिद है जिसके मध्य में ग्रेनाइट पत्थर से बनी एक आयताकार आकृति है जिसे 'काबा' कहा जाता है। इसीलिए मक्का को 'काबा का घर' भी कहा जाता है।
- मक्का सऊदी अरब में स्थित है। मुसलमान भाइयों के लिए यह दुनिया का सबसे पवित्र शहर है जहाँ हर मुसलमान हज करने को जाने की तमन्ना रखता है।

रामवृक्ष बेनीपुरी
जन्म : 23-12-1899
मृत्यु : 09-10-1968

रचनाकार-परिचय

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 23 दिसंबर 1899 को बिहार प्रांत के मुजफ़्फ़रपुर जिले के एक छोटे-से गाँव बेनीपुर में हुआ था। इन्होंने नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, समालोचना, जीवनवृत्त, पत्रकारिता आदि गद्य की सभी विधाओं में अपनी कलम चलाई। इन्होंने 'युवक' जैसे समाचारपत्र का संपादन किया। इन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय योगदान दिया। इनके सम्मान में सन् 1999 में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री बेनीपुरी 9 सितंबर 1968 को इस संसार से विदा हो गए।

प्रमुख कृतियाँ– माटी की मूरतें, चिता के फूल, मील के पत्थर, गेहूँ और गुलाब, कैदी की पत्नी, पतितों के देश में आदि।

अभ्यास

पाठ की समझ (Comprehension Skills)

- Listening and Writing Skills
- Oral Expression
- MCQs
- Fill in the Blanks
- Written Expression
  - — Based on Passage
  - — Short Answer Type Questions
  - — Long Answer Type Questions

1. श्रुतलेख

पश्चिम	मेहनत-मशक्कत	सामंजस्य	मनौती
मुहर्रम	इनसान	शिष्टाचार	आनंदातिरेक

मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सुभान खाँ कौन थे?
(ख) 'क्या आपका अल्लाह पश्चिम में रहता है?' यह किसने पूछा?
(ग) सुभान दादा पेशे से क्या थे?
(घ) हज करने के बाद सुभान दादा लेखक के लिए क्या सौगात लेकर आए थे?
(ङ) किसने, किससे कहा– "सवेरे नहा-खा लो, आज तुम्हें हुसैन साहब के पैक में जाना होगा।"

3. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सुभान खाँ कहाँ जाना चाहते थे?
(अ) मक्का ◯ (ब) बगदाद ◯ (स) तेहरान ◯ (द) इस्लामाबाद ◯

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सी बात सुभान दादा की दाढ़ी में नहीं थी?
(अ) लंबी ◯ (ब) काली ◯ (स) सफ़ेद चमकती ◯ (द) रोब बरसाती ◯

(ग) मस्जिद के निर्माण में लेखक के मामा ने क्या योगदान दिया?
(अ) पत्थर देकर ◯ (ब) इमारती लकड़ी देकर ◯
(स) धन देकर ◯ (द) ईंटें देकर ◯

(घ) मुहर्रम के दिन सुभान खाँ लेखक को कहाँ ले गए थे?
(अ) बाज़ार ◯ (ब) मेले ◯ (स) करबला ◯ (द) मैदान ◯

Scanned with CamScanner

लिखित प्रश्न (Written Questions)

उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

मक्का　　मुहर्रम　　सौगात　　अस्वाभाविकता　　रसूल

(क) पश्चिम की ओर के मुल्क में अल्लाह के _____ आए थे।

(ख) रसूल साहब की दाढ़ी के कुछ बाल _____ में रखे हैं।

(ग) जब लेखक छुट्टी में शहर के स्कूल से लौटा, दादा अनुपम _____ लेकर पहुँचे।

(घ) अंग्रेजी स्कूल के वातावरण ने अजीब _____ हर बात में ला दी थी।

(ङ) _____ के पीछे एक रोमांचकारी, हृदय को पिघलाने वाली घटना छिपी है।

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

मेरे मामा जी के बगीचे में शीशम, सखुए, कटहल आदि इमारती पेड़ों की भरमार थी। मस्जिद की सारी लकड़ी हमारे ही बगीचे से गई थी।

जिस दिन मस्जिद तैयार हुई थी, सुभान दादा ने जवार भर के प्रतिष्ठित लोगों को न्योता दिया था। जुमा का दिन था। जितने मुसलमान थे, सबने उसमें नमाज पढ़ी थी। जितने हिंदू आए थे, उनके सत्कार के लिए दादा ने हिंदू हलवाई रखकर तरह-तरह की मिठाइयाँ बनवाई थीं, पान-इलायची का प्रबंध किया था। अब तक भी लोग उस मस्जिद के उद्घाटन के दिन की दादा की मेहमानदारी भूले नहीं हैं।

(क) किस चीज की तैयारी हो रही थी?

(ख) सुभान दादा ने किसे न्योता दिया था?

(ग) सुभान दादा ने लोगों को किस दिन का न्योता दिया था?

(घ) हिंदू हलवाई क्या बना रहे थे?

(ङ) खाने के अलावा किस चीज का इंतजाम था?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

(क) लेखक का मुस्लिम समाज से गहरा संबंध होने का क्या कारण था?

(ख) सुभान खाँ हज पर जाने के लिए कर्ज क्यों नहीं लेना चाहते थे?

(ग) बचपन में मुहर्रम के दिन लेखक क्या करता था?

(घ) हज से लौटने के बाद दादा की दिनचर्या क्या थी?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(क) करबला जाने के लिए सुभान दादा के घर किस प्रकार की तैयारियाँ की गईं?

(ख) सुभान खाँ के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ग) इस पाठ की किन घटनाओं में हिंदू-मुस्लिम एकता को दर्शाया गया है?

(घ) प्रस्तुत कहानी से क्या संदेश मिलता है?

मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) सुभान खाँ के व्यवहार ने धर्म-निरपेक्षता का पाठ पढ़ाया। किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपको किसी से इसी प्रकार कुछ सीखने को मिला हो।

(ख) प्रस्तुत पाठ हमें अपने जीवन में किन-किन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है? यदि हम उन मूल्यों को अपनाते हैं तो हमें क्या लाभ होगा?

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

नीचे दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्दों की पहचान सर्वनाम या सार्वनामिक विशेषण के रूप में कीजिए–

(क) वह लगन से काम कर रहा था। _____

(ख) यह खूबसूरत कालीन है। _____

(ग) ये बच्चे ईमानदार हैं। _____

(घ) हमारा घर सबसे ऊँचा है। _____

(ङ) यह बहुत होशियार है। _____

4. पाठ में प्रयुक्त इन उर्दू शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए–

(क) मेहमानदारी _____ (ख) वक्त _____

(ग) सौगात _____ (घ) गुस्सेवर _____

5. दिए गए शब्दों के सामने स्त्रीलिंग अथवा पुल्लिंग लिखिए–

(क) खजूर _____ (ख) पृथ्वी _____

(ग) लकड़ी _____ (घ) अनुमान _____

(ङ) दर्द _____ (च) कवच _____

(छ) इमारत _____ (ज) मनौती _____

6. वाक्यांशों को एक शब्द से मिलाइए–

(क) जो स्मरण करने के योग्य है	सहिष्णु
(ख) जो व्यक्ति किसी बालक की देखरेख करता है	स्मरणीय
(ग) मर्म को छूने वाला	स्पर्धा
(घ) जिसमें सहनशक्ति हो	अभिभावक
(ङ) आगे बढ़ने की भावना	मर्मस्पर्शी

गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Role Play
- Creative Writing
- Discussion
- Creative Work

1. 'सुभान खाँ' कहानी के इस भाग का नाट्य मंचन कीजिए–
"क्या आपका अल्लाह ..... काम करने लगे।"
2. सुभान खाँ जैसे चरित्र वाले व्यक्ति आपके परिवार में या आस-पड़ोस में मिल जाएँगे। किसी ऐसे व्यक्तित्व के साथ अपने अनुभव को लिखिए।
3. 'हिंदू-मुस्लिम एकता' विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
4. विनय महाजन की कविता है– 'मत बाँटो इनसान को'। इस कविता को कार्ड बोर्ड पर सुंदर अक्षरों में लिखिए। इस कविता से संबंधित चित्र भी बनाइए और कार्ड बोर्ड को कक्षा में चिपकाइए।

Scanned with CamScanner

3

मौसी पपीतेवाली

पाठ का सार

अमृतयान के बस्तर में निवास करने के समय कालिंदी नामक एक महिला पपीते बेचने आती थी। अमृतयान की बेटी कविता ने उसे 'मौसी' कहकर संबोधित किया जिसके कारण उनकी अंतरंगता बढ़ गई और वह पपीते बेचने के स्थान पर बिना मोल उसके प्यार में बिक गई। एक दिन अमृतयान ने वहाँ से जाने की बात कही तो पपीतेवाली सुबक-सुबककर रोने लगी। अमृतयान के पैसे देने की बात पर उसने कहा कि दुनिया में प्यार, दुलार की कीमत चुकाई नहीं जा सकती।

चिंतन की कड़ियाँ

नारी ममता की खान है। अपने मातृत्व को लुटाने में वह अपने-पराये या किसी जातिभेद को नहीं जानती। कई बार सामाजिक परिस्थितियाँ सही प्यार को भी दायरे में खड़ा कर देती हैं और मनुष्य के पास अपनी सफ़ाई देने के सिवा कोई चारा नहीं होता।

अमृतयान भी खूब है। हर समय यात्रा करता रहता है। देश का कोना-कोना छान मारा। विदेशों की भी खूब सैर की। बूढ़ा हो गया पर पैर थकने का नाम ही नहीं लेते। इन यात्राओं में अमृतयान को तरह-तरह के अच्छे-बुरे अनुभव हुए। पर बस्तर में जो कुछ हुआ था, अमृतयान उसे आज तक नहीं भूल सका है।

आज से तिरपन साल पहले की बात है। एक दिन अमृतयान के पास उसके एक मित्र का पत्र आया। उसका नाम था जित्तन। वह बस्तर में रहता था। जित्तन ने अमृतयान को बुलाया था, "तुम जाओगे तो बस्तर के वनों में खो जाओगे। इतना सुंदर एकांत तुम्हें कहीं न मिलेगा।"

अमृतयान ने उससे पहले बस्तर नहीं देखा था। वह तुरंत चल दिया। साथ में थी पत्नी देवयानी और बेटी कविता। कुछ समय तक वह जित्तन के साथ रहा। फिर अलग रहने का इंतज़ाम हो गया। वह वहाँ रहकर कुछ लिखना चाहता था।

एक छोटा-सा खूबसूरत मकान, सामने रंग-रंग के फूलों का बगीचा। फूलों पर उड़तीं तितलियाँ, चहचहातीं चिड़ियाँ।

बस्तर की सुंदरता देख-देख अमृतयान मुग्ध था। सोचने लगा, 'क्यों न इस पर कोई किताब ही लिख डालूँ!

बस, फ़ौरन अमृतयान बस्तर के सीधे-सादे प्यारे-प्यारे लोगों के जीवन पर एक पुस्तक लिखने में जुट गया। जितना भी लिखता, लगता अभी तो और भी बहुत कुछ लिखना बाकी है। कभी-कभी उसे लगता, जैसे बस्तर के लोगों ने कोई जादू-सा कर दिया है उसपर।

एक दिन अमृतयान लिख रहा था। देवयानी और कविता आँगन में बैठी थीं। इतने में एक स्त्री पपीते

Scanned with CamScanner

बेचती हुई उधर से आ निकली, "पपीते लो, पपीते! मीठे मिसरी-से पपीते!"
पपीते मीठे थे या नहीं, यह तो नहीं पता पर उस स्त्री की आवाज़ में ऐसी मिठास थी कि देवयानी और कविता दरवाज़े पर जा खड़ी हुई।
पपीतेवाली ने कविता को देखा तो बस देखती ही रह गई। उसने कविता को गोद में उठा लिया। उसे प्यार करने लगी। फिर छाँटकर एक पपीता दिया और अपने रास्ते चलने लगी।
देवयानी पैसों के लिए बुलाती रह गई लेकिन वह स्त्री ऐसे चली गई, जैसे उसने कुछ सुना ही न हो।
देवयानी ने अमृतयान को बताया तो वह भी ताज्जुब करने लगा। अगले दिन फिर आई पपीतेवाली। कविता दौड़कर बाहर गई। उसे देखकर वह प्यार से बोली, "लेगी पपीता?"
"हाँ, कल वाला बहुत मीठा था, मौसी!"
'मौसी' शब्द सुनते ही फलवाली ने फिर उसे प्यार से गोदी में उठाया। चूमकर जाने लगी।
सहसा देवयानी ने पुकारा, "पपीतेवाली, पैसे तो ले जा!"
पपीतेवाली ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। बोली, "इतनी प्यारी बेटी है आपकी। क्या उसे कोई छोटी-सी चीज़ भी भेंट नहीं कर सकती मैं?"
बातों-बातों में उसने अपने बारे में बहुत कुछ बता दिया। उसका नाम था कालिंदी। वहाँ से कुछ मील दूर, नदी पार एक गाँव में रहती थी वह। दुनिया में कोई नहीं था उसका। अकेली थी। यह कहते-कहते आँखें भर आईं लेकिन फिर जैसे उसे अपनी भूल पता चली। बोली, "नहीं, अकेली कहाँ! सभी गाँववाले तो मेरे अपने हैं। स्कूल के बच्चे भी हैं, जिनके लिए रोज़ ताज़े पपीते लेकर जाती हूँ। और फिर कविता भी तो है, यह मेरी अपनी बेटी है।"
सुनकर देवयानी की आँखें भी भर आईं। तब तक अमृतयान भी बाहर आ गया था। उसने भी पैसे लेने की ज़िद की तो कालिंदी बोल पड़ी, "बाबू जी! आप बेकार चिंता करते हैं। मैं एक पैसा भी नहीं छोड़ने वाली। एक दिन पूरा हिसाब करूँगी, हाँ!"
अमृतयान क्या कहता, चुप रहा। इतनी सी देर में कविता कालिंदी से इस कदर घुल-मिल गई कि कालिंदी चली तो वह भी उसके साथ चल दी। कालिंदी बोली, "ले जाऊँ बाबू जी, इसे भी अपने साथ?"
न अमृतयान मना कर सका, न देवयानी। कविता कालिंदी के साथ चली गई। शाम के समय कालिंदी उसे घर छोड़ती गई।
फिर तो यह रोज़ का ही नियम बन गया। कविता सुबह से ही नहा-धोकर, अच्छे कपड़े पहन, कालिंदी मौसी के इंतज़ार में बैठ जाती। ठीक समय पर पपीतों से भरी टोकरी सिर पर रखे आती दिखाई देती कालिंदी। कविता चिल्ला पड़ती, "मौसी पपीतेवाली! मौसी पपीतेवाली!"
और फिर कविता कालिंदी के साथ चली जाती। दिन भर उसी के साथ रहती। मीठी-मीठी बातें करती, कहानियाँ सुनती।
आँधी-तूफ़ान में भी कालिंदी का नियम कभी न टूटता। एक दिन धुआँधार बारिश हो रही थी। कालिंदी एक पुराना-सा छाता लिए आ गई। अमृतयान ने पूछा, "क्या ऐसे मौसम में भी पपीते बेचने के लिए आना ज़रूरी था?"
कालिंदी एक क्षण चुप रही। फिर कहा, "मैं न आती तो स्कूल के बच्चे मेरी बाट देखते। बच्चों के बीच रहकर मुझे भी खुशी होती है। कविता को देखे बिना भी तो चैन नहीं पड़ता।"
"कालिंदी, क्या लगता है तुम्हें कविता को देखकर? आज तुम्हें बताना ही होगा।"
अब कालिंदी छिपा न सकी। उसने बता दिया, बिलकुल कविता जैसी ही थी उसकी बेटी। आज से चार-पाँच बरस पहले

Scanned with CamScanner

गाँव में हैजा फैला। वह उसकी चपेट में आ गई। कालिंदी का पति भी हैजे का शिकार हो गया। तब से फल बेचकर गुज़ारा करती है। स्कूल के बच्चों को देखकर प्यार उमड़ आता है। उसकी बेटी आज होती तो वह भी स्कूल में पढ़ रही होती।

"बिलकुल कविता जैसी थी वह बाबू जी! गोरी, गोल-मटोल।" कहते-कहते कालिंदी की आँखों से आँसू बह चले।

इसके तीसरे दिन की बात है। कालिंदी सुबह-सुबह कविता को लेकर गई पर शाम को नहीं लौटी। दिन भर हल्की बूँदाबाँदी होती रही। शाम होते-होते ज़ोरों की बारिश शुरू हो गई। अँधेरा हो गया पर कालिंदी का कुछ पता न चला। अमृतयान दौड़ा-दौड़ा वहाँ गया, जहाँ स्कूल के बाहर कालिंदी पपीते बेचा करती थी। एक दुकानदार से पूछा। वह बोला, "पपीतेवाली तो आज दुपहर को ही चली गई, उसके साथ एक छोटी लड़की थी।"

सुनते ही अमृतयान का जी धक् से रह गया। उसने घर आकर देवयानी को बताया।

देवयानी तो रोते-रोते बेहाल हो गई। चिल्लाकर बोली, "ले गई चतुर! पपीतों के पैसे नहीं लेती थी। तभी मुझे शक हुआ था। कहती न थी कि एक दिन सारा हिसाब करूँगी। कर लिया न हिसाब! न जाने मेरी फूल-सी बेटी कहाँ होगी!"

"नहीं देवयानी, ऐसा नहीं हो सकता।" अमृतयान समझाने की कोशिश करता, पर देवयानी पर किसी बात का असर नहीं हो रहा था।

"परदेश में हम किससे मदद माँगे? कौन ढूँढ़कर लाएगा हमारी बेटी को?" कहते-कहते देवयानी की हिचकियाँ बँध गईं। अमृतयान देवयानी को धीरज बँधाते-बँधाते खुद रो पड़ा। रात भर पानी बरसता रहा। अमृतयान मन-ही-मन सोच रहा था, 'क्या पुलिस की मदद लूँ?' पर जाने क्यों, उसे पूरा विश्वास था कि कालिंदी जरूर लौटकर आएगी।

दिन निकला। बारिश कुछ कम हो गई। अमृतयान सोच नहीं पा रहा था कि वह क्या करे! तभी उसे कालिंदी की आवाज़ सुनाई दी, "बाबू जी... दीदी...!"

अमृतयान ने झट से दरवाज़ा खोला। देखा, सामने कालिंदी खड़ी थी। साथ में थी कविता। कालिंदी ने अपराधी भाव से कहा, "माफ़ कीजिए, बाबू जी, आपको परेशानी हुई।"

"हुआ क्या था? साफ़-साफ़ क्यों नहीं बताती?" अमृतयान ने कुछ गुस्से में कहा।

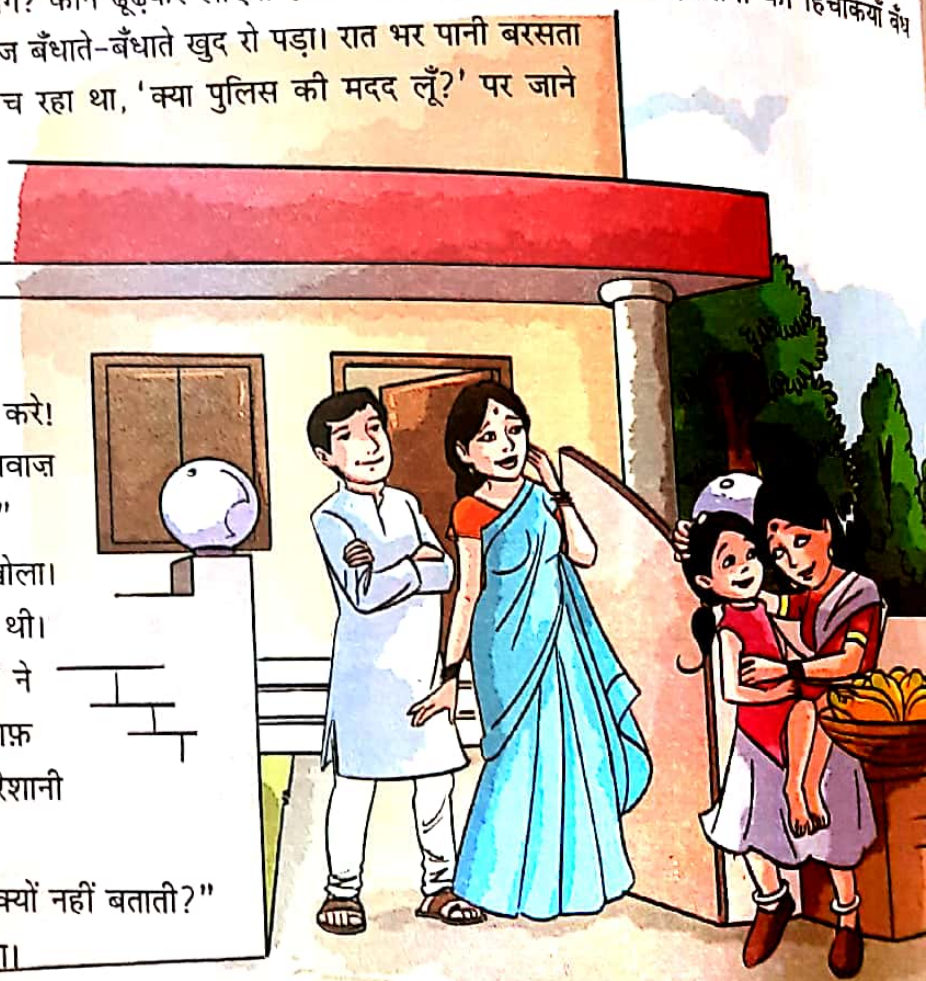

कालिंदी भीतर आ गई। बोली, "कई दिनों से कविता मेरा गाँव देखने की ज़िद कर रही थी। कल बारिश के कारण की छुट्टी हो गई। मैंने सोचा, आज इसे गाँव दिखा लाऊँ। शाम को छोड़ जाऊँगी। जल्दी में आपको बताया भी

Scanned with CamScanner

वहाँ यह बच्चों के साथ खेलकूद में मस्त हो गई। शाम के समय लौटने के लिए कोई नाव न मिली। बारिश में नदी उफन रही थी। रात घिरने को थी। कोई मल्लाह चलने को राजी ही नहीं हुआ। मुझे मालूम था, आप परेशान होंगे, पर...।"

देवयानी कविता को छाती से चिपकाए कालिंदी की बात सुन रही थी। रात में उसने कालिंदी को बुरा-भला कहा था। इस बात का गहरा पछतावा था उसे।

इसके लगभग डेढ़-दो हफ्ते बाद अमृतयान का लौटने का कार्यक्रम बन गया। सुबह-सुबह कालिंदी आई तो कविता चिल्लाई, "पपीते वाली मौसी! आज हम जा रहे हैं।"

कालिंदी भीतर आई तो उसके चेहरे पर दुख की छाया थी। पूछने लगी, "क्या सचमुच बाबू जी, आप चले जाएँगे?"

अमृतयान बोला, "हाँ, कालिंदी! किताब पूरी हो गई। अब जाना ही होगा। तुम्हारे बारे में भी लिखा है किताब में।"

कालिंदी कविता को गोद में लेकर बैठी रही। उसके बालों में उँगलियाँ फिराती रही।

अचानक देवयानी को कुछ याद आया। बोली, "कालिंदी, अब तो पपीतों के पैसे बता दो।"

अमृतयान ने भी ज़िद की। कालिंदी का चेहरा तमतमा उठा। बोली, "बाबू जी, पैसे देने ही हैं तो केवल पपीतों के क्यों? उन कहानी-किस्सों के भी पैसे दो जो मैं रोज़ कविता को सुनाती थी। उस प्यार-दुलार के भी पैसे दो जो मैं माँ की तरह उसपर लुटाती रही।" कहते-कहते कालिंदी सुबकने लगी।

अमृतयान को अपनी गलती पता चली। धीरे से बोला, "माफ़ करना कालिंदी! प्यार-दुलार की कीमत दुनिया में कोई नहीं चुका सकता।"

कालिंदी ने एक ताज़ा, बड़ा-सा पपीता कविता को पकड़ाया। बोली, "याद रखोगी न बेटी, अपनी पपीते वाली मौसी को!"

कविता भी उदास थी। बोली कुछ नहीं पर उसकी आँखें कह रही थीं, 'हाँ, मौसी ज़रूर!'

कालिंदी टोकरी उठाकर चली गई। अमृतयान उसे जाते हुए देखता रहा। वह जानता था कि कालिंदी रो रही है और उन तीनों की आँखों में भी तो आँसू थे।

–देवेंद्र सत्यार्थी

शब्दार्थ

मुग्ध	–	मोहित	ताज्जुब	–	आश्चर्य
सहसा	–	अचानक	बेहाल	–	बुरा हाल

ज्ञान मंजूषा

* अंकों में भी संस्कृति झलकती है। जैसे–

एक	–	परमात्मा	:	अल्लाह, ईश्वर, गॉड नाम से जाने जाते हैं पर हैं एक
दो	–	पक्ष	:	कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष
तीन	–	काल	:	भूत, वर्तमान, भविष्य
चार	–	वेद	:	ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद
पाँच	–	तत्व	:	पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, वायु
छह	–	ऋतु	:	वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर
सात	–	सुर	:	षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद
आठ	–	धातु	:	सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा
नौ	–	रस	:	शांत, शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीभत्स, भयानक, वात्सल्य, वीर
दस	–	अवतार	:	मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, कल्कि

Scanned with CamScanner

देवेंद्र सत्यार्थी
जन्म : 28-05-1908
मृत्यु : 12-02-2003

रचनाकार-परिचय

'लोकयात्री' के रूप में मशहूर श्री देवेंद्र सत्यार्थी का जन्म पंजाब के संगरूर जिले में भवानीह नामक स्थान पर 28 मई 1908 को हुआ था। हिंदी, पंजाबी और उर्दू भाषा पर इनका समान अधिकार था। अपने जीवन काल में इन्होंने लगभग पचास पुस्तकें लिखीं जिनमें उपन्यास, लघु कथाएँ, कहानियाँ य संस्मरण शामिल हैं। इनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है, इनके द्वारा तैयार किया गया एक अनमोल संकलन जिसमें इन्होंने पचास भाषाओं के लगभग तीन हजार लोकगीतों को समावेशित किया है। साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि देकर सम्मानित किया था।

इनका निधन 12 फरवरी 2003 को हुआ था।

प्रमुख कृतियाँ– रथ के पहिये, कठपुतली, दूध गाछ, तेरी कसम सतलुज, रेखाएँ बोल उठीं, चट्टान से पूछ लो, मेरे साक्षात्कार, धरती गाती है आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

अभ्यास

पाठ की समझ (Comprehension Skills)

- Listening and Writing Skills
- Oral Expression
- MCQs
- Fill in the Blanks
- Written Expression
  - — Based on Passage
  - — Short Answer Type Questions
  - — Long Answer Type Questions

1. श्रुतलेख

तिरपन बस्तर ताज्जुब धुआँधार कार्यक्रम

मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अमृतयान हर समय क्या करता रहता था?

(ख) अमृतयान के पास उसके किस मित्र का कहाँ से पत्र आया?

(ग) मित्र ने अमृतयान को बस्तर की किस विशेषता के बारे में बताया?

(घ) अमृतयान की पत्नी और बेटी का नाम क्या था?

(ङ) पपीतेवाली का प्रतिदिन का क्या नियम बन गया था?

3. पाठ के अनुसार सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पपीतेवाली अपने पपीते कैसे बताती थी?

(अ) पक्के ○ (ब) पीले ○ (स) मीठे ○ (द) लाल ○

(ख) पपीतेवाली किन्हें पपीते बेचती थी?

(अ) मंदिर में भक्तों को ○ (ब) मेले में लोगों को ○

(स) स्कूल के बच्चों को ○ (द) चिड़ियाघर में पक्षियों को ○

(ग) कविता पपीतेवाली को कहकर बुलाती थी–

(अ) बुआ ○ (ब) मौसी ○ (स) ताई ○ (द) चाची ○

(घ) इसकी कीमत कोई नहीं चुका सकता–

(अ) मार की ○ (ब) विचार की ○ (स) सत्कार की ○ (द) प्यार की ○

(ङ) पपीतेवाली का नाम था–

(अ) हरनंदी ○ (ब) आनंदी ○ (स) कालिंदी ○ (द) सानंदी ○

Scanned with CamScanner

लिखित प्रश्न (Written Questions)

4. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

मुग्ध　　प्यार-दुलार　　कार्यक्रम　　बूँदाबाँदी　　अनुभव

(क) यात्राओं में अमृतयान को तरह-तरह के अच्छे-बुरे _____ हुए।

(ख) बस्तर की सुंदरता देख-देख अमृतयान _____ था।

(ग) दिन भर हल्की _____ होती रही।

(घ) _____ की कीमत दुनिया में कोई नहीं चुका सकता।

(ङ) अमृतयान का लौटने का _____ बन गया।

5. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

कालिंदी भीतर आ गई। बोली, "कई दिनों से कविता मेरा गाँव देखने की ज़िद कर रही थी। कल बारिश के कारण स्कूल की छुट्टी हो गई। मैंने सोचा, आज इसे गाँव दिखा लाऊँ। शाम को छोड़ जाऊँगी। जल्दी में आपको बताया भी नहीं। पर वहाँ यह बच्चों के साथ खेल कूद में मस्त हो गई। शाम के समय लौटने के लिए कोई नाव न मिली। बारिश में नदी उफन रही थी। रात घिरने को थी। कोई मल्लाह चलने को राज़ी ही नहीं हुआ। मुझे मालूम था, आप परेशान होंगे, पर...।"

(क) कई दिनों से कविता क्या ज़िद कर रही थी?

(ख) लौटने के लिए नाव कब न मिली?

(ग) स्कूल की छुट्टी क्यों हो गई थी?

(घ) कोई मल्लाह चलने को राज़ी क्यों नहीं हुआ?

(ङ) कालिंदी के गाँव जाकर कविता क्या करने में मस्त हो गई?

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

(क) पपीतेवाली की किस बात से देवयानी की आँखें नम हो गईं?

(ख) पैसे लेने की बात पर कालिंदी का क्या जवाब होता था?

(ग) बस्तर की सुंदरता देख अमृतयान के मन में क्या विचार आया?

(घ) देवयानी को किस बात का पछतावा हुआ?

(ङ) अपने जीवन का सूनापन पपीतेवाली कैसे भरती थी?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(क) अमृतयान को देवयानी की कौन-सी बात जानकर आश्चर्य हुआ?

(ख) पपीतेवाली को कविता से अतिरिक्त स्नेह क्यों था?

(ग) कालिंदी के पति और बेटी का देहांत कैसे हुआ?

(घ) कविता के वापस न लौटने पर देवयानी और अमृतयान के मन में क्या विचार आए?

(ङ) अमृतयान को बस्तर का वातावरण कैसा लगा? कारण सहित बताइए।

मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) बच्चे छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब नहीं जानते। वे केवल प्यार के भूखे होते हैं। क्या आप इस बात से सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

(ख) यदि आप देवयानी की जगह होते तो कविता के घर न लौटने पर क्या कदम उठाते और क्यों?

Scanned with CamScanner

भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Prefix
- Tatsam Words
- Use of 'कि' and 'की'
- Pair Words
- Homonyms
- Synonyms
- Noun
- Number

1. उपसर्ग शब्द 'उप' और 'सर्ग' के मेल से बना है। 'उप' का अर्थ है 'निकट' और 'सर्ग' का अर्थ है 'सृष्टि करना'। 'उपसर्ग' शब्द का अर्थ है 'निकट बैठकर नया शब्द बनाना'। व्याकरण की दृष्टि से इसका अर्थ है, नए अर्थ वाला शब्द बनाना।
जो शब्दांश शब्दों से पहले जुड़कर उनका अर्थ बदल देते हैं, **उपसर्ग** कहलाते हैं। जैसे– उप + कार = उपकार। यहाँ 'उप' उपसर्ग है।

नीचे दिए गए शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए–

(क) विदेश _____ (ख) कुपुत्र _____
(ग) सुपात्र _____ (घ) उत्कर्ष _____
(ङ) अशांति _____ (च) प्रहार _____

2. **इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–**

(क) बच्चा _____ _____ (ख) स्त्री _____ _____
(ग) बेटी _____ _____ (घ) मित्र _____ _____
(ङ) फूल _____ _____ (च) वन _____ _____
(छ) कपड़ा _____ _____ (ज) देश _____ _____

3. **तत्सम** शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– 'तत्' और 'सम'। 'तत्' का अर्थ 'उसके' और 'सम' का अर्थ 'समान' है। इस प्रकार तत्सम शब्द का अर्थ है– उसके समान अर्थात् 'संस्कृत के समान'।
वे शब्द, जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी परिवर्तन के अपने मूल रूप में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं। जैसे– सूर्य, अग्नि, कर्ण, प्रकाश, दिवस आदि।

दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

(क) आँसू _____ (ख) हाथ _____
(ग) गाँव _____ (घ) पत्ता _____
(ङ) छाता _____ (च) माता _____

4. **नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों को उसके भेद के अनुसार अलग-अलग कीजिए–**

बच्चे	किसान	कविता	गाँव	सुंदरता	बस्ता
फल	ममत्व	स्त्री	अमृतयान	हँसी	घबराहट
नदी	कालिंदी	श्रेया	मिठास	देवयानी	अपनापन

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा – _____ _____ _____ _____ _____ _____

(ख) जातिवाचक संज्ञा – _____ _____ _____ _____ _____ _____

(ग) भाववाचक संज्ञा – _____ _____ _____ _____ _____ _____

Scanned with CamScanner

5. दिए गए वाक्यों में 'कि' या 'की' का प्रयोग करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) अमृतयान ने विदेशों _____ भी खूब सैर की।

(ख) पपीतेवाली _____ आवाज़ में ऐसी मिठास थी _____ देवयानी और कविता दरवाज़े पर जा खड़ी हुईं।

(ग) कविता कालिंदी से इस कदर घुल-मिल गई _____ कालिंदी चली तो वह भी उसके साथ चल दी।

(घ) कई दिनों से कविता कालिंदी का गाँव देखने _____ जिद कर रही थी।

(ङ) कालिंदी ने कहा _____ बाबू जी, पैसे देने ही हैं तो केवल पपीतों के क्यों?

6. नीचे दिए गए शब्दों के मिलते-जुलते युग्म शब्द लिखिए–

प्यास, दमक, जंतु, फूस, पोषण, पलट

उदाहरण– भाग-दौड़

(क) उलट _____ (ख) भूख _____

(ग) जीव _____ (घ) पालन _____

(ङ) चमक _____ (च) घास _____

7. नीचे दिए गए वाक्यों को बहुवचन रूप में लिखिए–

(क) पपीतेवाली ने उसे पपीता दिया। _____

(ख) अमृतयान ने कहानी लिखी। _____

(ग) कालिंदी टोकरी उठाकर चली गई। _____

(घ) बच्चा खेल-कूद में मस्त हो गया। _____

(ङ) तितली बगीचे में उड़ रही है। _____

(च) उसने अपनी किताब बस्ते में डाली। _____

8. कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। इन्हें **अनेकार्थी** शब्द कहा जाता है।
नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए–

(क) बाट _____ _____ (ख) कल _____ _____

(ग) पत्र _____ _____ (घ) पानी _____ _____

(ङ) फल _____ _____ (च) भेंट _____ _____

गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Speaking Skill
- Poem Writing
- Debate
- Art Skill and Creative Writing
- Conversation

1. अपने किसी अविस्मरणीय अनुभव के बारे में अपने मित्र को बताइए।
2. जीवन अनमोल है। सुख-दुख इसके साथी हैं। इसका एक-एक पल खुशी से भर दें। इस भाव को व्यक्त करते हुए स्वरचित कविता लिखिए।
3. देवयानी और अमृतयान ने अपनी बेटी को पपीतेवाली के साथ जाने दिया। उसने ऐसा करके ठीक किया या नहीं। कक्षा में वाद-विवाद के रूप में विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. किन्हीं पाँच प्रकार के फलों के चित्र बनाकर उनके नीचे उनके नाम और उन्हें खाने से होने वाले लाभों की जानकारी दीजिए।
5. मान लीजिए कि कविता रात भर नहीं आई है। तब सुबह थाने जाकर अमृतयान ने थानेदार से क्या कहा होगा? वार्तालाप के रूप में लिखिए।

Scanned with CamScanner